ISSN 2319 - 359X

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

IDEAL

Peer Reviewed and
UGC Listed Journal No. 47026

ISO 9001 : 2015 QMS
ISBN / ISSN

Single Blind Review / Double Blind Review

Volume - XIII | Issue - II
March - August - 2025
MARATHI / HINDI PART - I

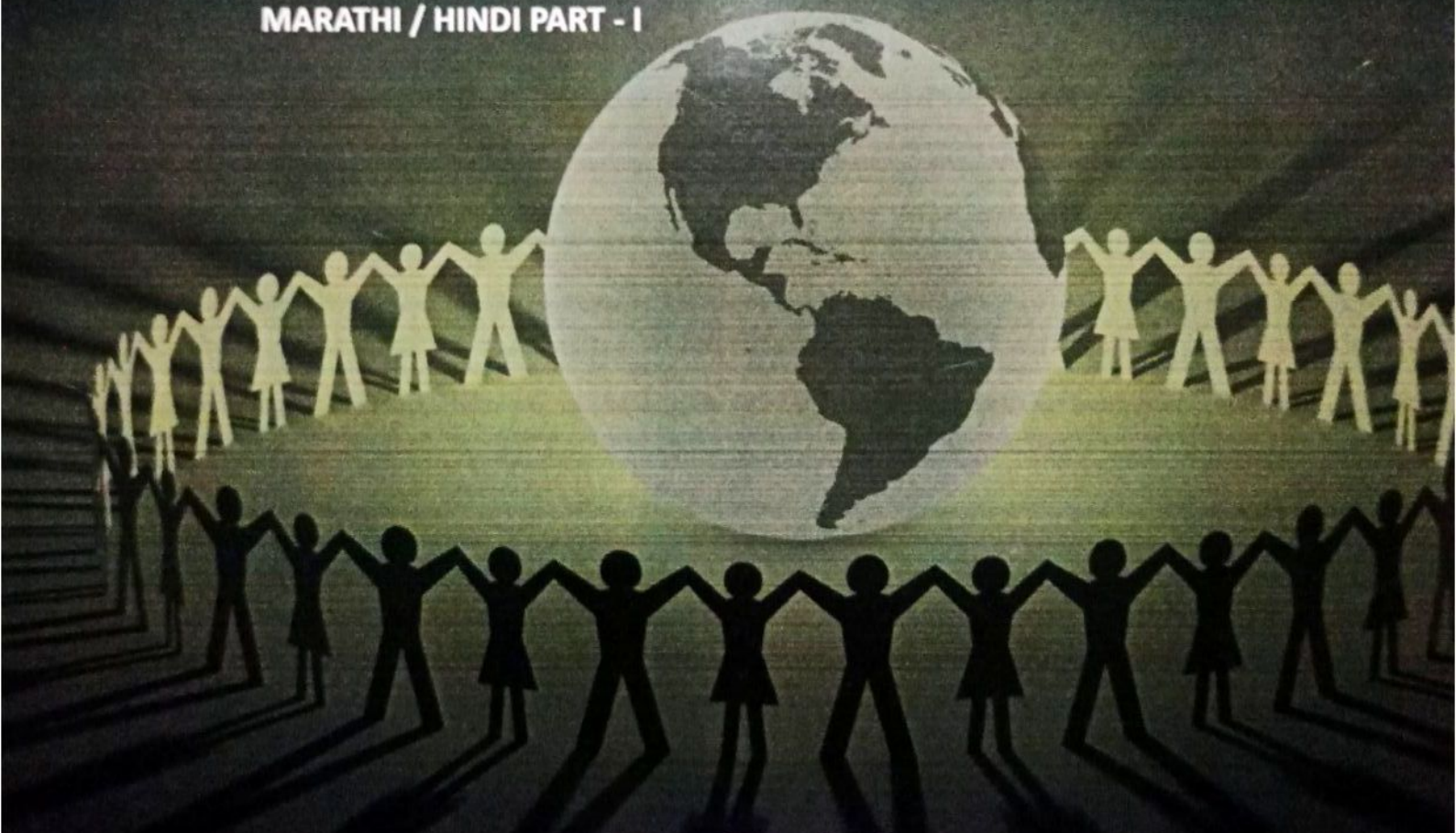

Impact Factor / Indexing
2023 - 7.537
(www.sjifactor.com)

Ajanta Prakashan

ISSN 2319 - 359X

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

IDEAL

Single Blind Review / Double Blind Review

Volume - XIII | Issue - II | March - August 2025

MARATHI / HINDI PART - I

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

Peer Reviewed and
UGC Listed Journal No. 47026

Impact Factor / Indexing
2023 - 7.537
www.sjifactor.com

EDITOR

Dr. Vinay Shankarrao Hatole
Assistant Professor, International Center of Excellence in Engineering
& Management (ICEEM) College, Waluj, Chhatrapati Sambhajinagar. (MS)

PUBLISHED BY

AJANTA PRAKASHAN
Jaisingpura, Chhatrapati Sambhajinagar. (MS)

CONTENTS OF HINDI PART - I

अनु क्र.	लेख और लेखक के नाम	पृष्ठ क्र.
१	समकालीन हिंदी कविता में दलित चेतना **डॉ. विनायक शिवाजी शिंदे**	१-५
२	'धरती धन न अपन.....' में चित्रित दलित विमर्श **डॉ. धर्मेंद्र पंडित थोरात**	६-९
३	उचल्या (उचक्का) आत्मकथा में चित्रित दलितों की समस्या **डॉ. कैलासकुमार गुंडोपंथ पाटील**	१०-१५

३. उचल्या (उचक्का) आत्मकथा में चित्रित दलितों की समस्या

डॉ. कैलासकुमार गुंडोपंथ पाटील
हिंदी विभाग, पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय, कवठेमहांकाळ, जि. सांगली

आज के इस वैज्ञानिक युग में विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में अपने -अपने राष्ट्र का विकास किस तरह से हो जाएगा, विकास की इस प्रतियोगिता में बाधा बनने वाली विभिन्न समस्या कौन-कौन सी है , इसका अनुसंधान होता जा रहा है. साहित्यकार, आचार्य, विभिन्न प्रकार के विद्वान अपनी-अपनी कलम के माध्यम से लगातार कहानी ,नाटक, निबंध, आत्मकथा, रेखाचित्र, संस्मरण,कविता आदि के माध्यम से व्यक्तिगत जीवन की और सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत करने लगे हैं. विकसित, अविकसित सभी राष्ट्रों में वहां की जनता और समाज के सामने विभिन्न प्रकार की समस्याएं आज मौजूद है. हिंदी और मराठी दलित आत्मकथाओं के लेखकों ने जिस जीवन को भोगा उसी को सीधी-साधी भाषा में अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति की और जो कुछ भी भोगा उसे अपनी सहज-स्वभाविक आवरण हीन भाषा में व्यक्त किया. हिंदी और मराठी दलित आत्मकथाओं का अध्ययन करने से स्पष्ट हो जाता है कि दलित आत्मकथा समाजाभिमुख है. दलित आत्मकथाओं ने अपने अनुभूतियों से साक्षात्कार कराया.सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक आदि सभी प्रकार की समस्याएं मानवता को नष्ट करती हुई दलित आत्मकथाओं दिखाई देती है. इन्हीं समस्याओं को अपनी आत्मकथा में लक्ष्मण गायकवाड़ जी ने प्रस्तुति की है. लक्ष्मण गायकवाड़ जी ने 'उचल्या' मराठी आत्मकथा में दलितों की समस्याओं को प्रकाश में लाने का काम किया है. 'उचल्या' आत्मकथा का हिंदी में अनुवाद 'उचक्का' नाम से डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे जी ने किया है.'उचल्या' (उचक्का) में जातिगत अस्मिता और जाति के आधार पर पद दलित शोषित जातियों पर किए गये अन्याय-अत्याचार दिखाई देते हैं.1989 के साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित उचल्या आत्मकथा बिना आत्मदया या किसी किस्म की आत्मश्लाघा के हमारे सामाजिक यथार्थ को सामने लाती है. दलित लेखकों की परम्परागत कथा से अलग, यह ऐसा आत्मवृतांत है जो समाज के छोटे-छोटे अपराधों पर परवरिश पाते एक समूह का प्रतिनिधित्व करता.

दलित शब्द का अर्थ है 'उत्पीड़ित', 'टूटा हुआ' या 'कुचला हुआ' इस हद तक कि मूल पहचान खो जाए. हालाँकि, इस नाम को उन लोगों ने अपना लिया है जिन्हें अन्यथा हरिजन या ' अछूत ' कहा जाता है.दलित अंग्रेज़ी शब्द डिप्रेस्ड क्लास का हिन्दी अनुवाद है.भारत में वर्तमान समय में 'दलित' शब्द का अनेक अर्थों में उपयोग होता है. वैसे तो इसकी कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं हो सकती, किन्तु मोटे तौर पर उन वर्गों को दलित कहा जाता है, जो वर्तमान में अनुसूचित जाति के अन्तर्गत आते हैं. दलित शब्द का अर्थ पीड़ित, शोषित, 'दबाया हुआ' एंव 'जिनका हक छीना गया हो' होता है. इस अर्थ में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि सभी धर्मों में दलित वर्ग मौजूद है. दलित शब्द का शाब्दिक अर्थ है- दलन किया हुआ. इसके तहत वह हर व्यक्ति आ जाता है जिसका शोषण-उत्पीडन

हुआ है. रामचन्द्र वर्मा ने अपने शब्दकोश में दलित का अर्थ लिखा है, मसला हुआ, मर्दित, दबाया, रौंदा या कुचला हुआ, विनष्ट किया हुआ.

आस-पास 80 प्रतिशत दलित समाज के लोग ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं.आर्थिक शोषण उनकी सबसे गंभीर समस्या बनी हुई है. वे लगभग सभी सीमांत किसान या भूमिहीन मजदूर हैं.भोजन, वस्त्र , आवास ,चिकित्सा , शिक्षा , रोजगार ,पेयजल ,सामाजिक सुरक्षा आदि प्रमुख समस्या को 'उचल्या' ' (उचक्का)आत्मकथा में लक्ष्मण गायकवाड़ जी ने व्यक्त किया है.स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास, रोजगार और मजदूरी, कानूनी अधिकारों का प्रयोग, निर्णय लेने और राजनीतिक भागीदारी, तथा ग्रामीण विकास जैसे क्षेत्रों में दलित महिलाओं को विकास नीतियों और कार्यक्रमों से लगभग पूरी तरह से बाहर रखा गया है.

आवास की जो समस्या दलितों की थी और ऐसी समस्या निर्माण करनेवाले लोगों को उचल्या (उचक्का) में बताते हुए कहते है पारदी समुदाय कलम्ब (जिला उसमाबाद) में रणनीतिक स्थान पर वर्षों से रह रहा था.इस जमीन का उपयोग अपने स्वार्थ साध्य करने के इरादे से, पुलिस, सरकार और व्यापारियों के गठबंधन ने पारदी समाज के लोगों के घरों को जला दिया, फिर गाँव का पुनर्वास किया. भारत का तथाकथित अभिजात्य वर्ग को पीढियों से यह लत है कि यदि कोई दलित मिले तो उसे डांटो व उससे ही अपना कार्य कराओ यदि वह आना कानी करें तो उसे पीटो.

शिक्षा का अभाव से खुद दलित भी वंशानुगत इतने मूरख होते है कि पढाई लिखाई में मन नहीं लगाते अपने बच्चों को पढ़ाने में धन खर्च नहीं करते. शराब खूब पीते है आपस में छोटी-छोटी बातौ पर झगडा बहुत करते है.अपनी प्रोग्रेस की बिल्कुल नहीं सोचते.भारत में ज्यादातर दलित हिंदू हैं.ऐसी घटनाएँ हुई हैं जिनसे पता चलता है कि दलितों को उच्च जाति के हिंदुओं द्वारा मंदिरों में प्रवेश करने और धार्मिक जुलूसों में भाग लेने से प्रतिबंधित किया गया था.

अनाज कि समस्या

लक्ष्मण जी कहते हैं हमारे घर में गरीबों के कारण अखड-श्रवण में कोई रोट नहीं मिलता. तब हम बाबा के बागान से शकरकंद की पत्तियां उखाड़ते थे.इस पत्तियों से खाना बनता था. हम इसमें से पानी निकाल देते थे और शकरकंद की पत्तियों को बांट लेते थे. उनके मुत्के कोटबले हुआ करते थे. इस पर कितने दिन रहना है. जंगल में जहाँ रतालू थे, पत्तियाँ खुरच रही थीं और गर्मी का मौसम था। यह कदम उठाने के बाद बाबा के मालिक ने बाबा को एक बार डांटा और आठ दिनों तक घर पर ही रखा. या तो हम भूखे मरने लगते थे, फिर बाबा के मालिक से शकरकंद के पत्ते ले आते थे तो बाबा से कुछ नहीं कह पाते थे. खैर, बाबा ने मालिक से सच-सच कह दिया कि हमारे घर में सब्जी है, बच्चे भूख से तरसते है.

शिक्षा की समस्या

दलितों में शिक्षा के प्रति प्रेम प्रकट करते हुए 'उचक्का' में लिखते हैं "एक बार स्कूल ने 15 अगस्त की तैयारी शुरू कर दी. 15 अगस्त हमारे स्कूल के लिए ख़ुशी का दिन हुआ करता था. इसी समय मैंने गुरुजी से धीरे से कहा, 'गुरुजी, मैं भाषण देना चाहता हूं.' तेवा धिमधिमे गुरुजी मुझसे प्रेम करते थे. धिमधीमे गुरुजी महार जाति के थे. पथरूटा को अकेले सीखने पर वे मुझे आश्चर्यचकित करते

थे. फिर उन्होंने कहा, 'आप भाषण दीजिए. मैं भाषण के लिए आपका नाम लेता हूं.' मैं इन बातों से बहुत खुश हुआ था. गांधी का, पंडित जवाहरलाल-नेहरू का पाठ पढ़ा और भाषण तैयार किया."

चोरी की समस्या

गरीबी के कारण दलितों को चोरी करनी पड़ती थी,चोरी करने के तरीके किस प्रकार के थे इसका वर्णन किया है. "पैसे वाला जब भीड़ में जाता है तो अपने साथियों को चेतावनी देता है. साथी धीरे-धीरे वापस आते हैं. बाजार में पैसे वाले आदमी खरीदने वालों की भीड़ में जाते हैं तब उस भीड़ में गिरोह के दो या तीन सदस्य आगे आते हैं और एक या दो पीछे हट कर भीड़ लगाने लगते हैं. जो जेब काटता है उसकी दोनों उंगलियों के बीच एक पत्ता होता है. वह जल्दी से नीचे एक पत्ते से पैसे वाली जेब काटता है जहां उस आदमी ने पैसे रखे होते हैं और जल्दी से उस पत्ते को अपने मुंह में डालता है और अपनी जीभ के नीचे रख लेता है.वह अपनी जेब में दो उंगलियां डालता है और नोट निकाल लेता है.उसके पीछे उसका साथी झट से उसके हाथ से पैसे छीन लेता है. फिर एक इशारा करता है, दूसरा चिल्लाता है और जाने का इशारा करता है. सभी लोग चले गए और नियत स्थान पर तितर-बितर हो गए."

बेरोजगारी की समस्या

गांव में रोजगार न होने के कारण घर की जिम्मेदारियां माँ ही उठाती थी. माँ गांव से दूध इकट्ठा करके लातूर जाती थी.आते समय हमें कोई ना कोई पदार्थ खाने को लाती. कभी-कभी जब दूध नहीं बेचा जाता तो मेरी माँ उसे घर ले आती और रोने लगती. लेकिन मैं खुश रहता क्योंकि दूध खाने को मिलता. दादा दूध में गुड़ मथकर मुझे क्यों खिलाएँगे.

अब अच्छा काम करने लगा. भैया, भाभी को अब अच्छा लग रहा था. खैर, मैं उदास था. ऐसा लग रहा था कि बाबा को अब नौकरी नहीं मिलेगी. हरचंदा की देखभाल कौन करेगा? मैं सीखूं और बाबा के मन में बड़ा होऊं. खैर स्कूल बी छूट गया. तो अब मैं कैसे बड़ा हो सकता हूँ? अच्छी नौकरी कैसे पाएं? मुझे इस विचार की लालसा थी.

अंधविश्वास की समस्या

लक्ष्मण जी कहते हैं, हमारे घर में कभी अच्छे दिन नहीं आये,गरीबी और लाचारी थी. हमारे बगल में चचेरे भाई की पत्नी अंजनाबाई पर जादू-टोना करने का संदेह था. एक बार, ऐसे ही अवसर पर, भाभी ने फैसला किया कि अंजनाबाई उन्हें समझाने के लिए जादू का उपयोग करके उनकी रोटी रखेगी और पका हुआ पूरन उठा कर ले जाएगी.

गरिबी की समस्या

गरीबी के कारण दलितों को कपड़े, जूते , चप्पल नहीं मिलते थे. लक्षण जी कहते हैं "मुझे कभी जूते या चप्पल पहनने को नहीं मिले. नंगे पैर चलें. खैर, फिर भी, हरचंदा को वह कहता, "अगर तुम्हारे पास मेरा एक जूता नहीं है, तो मेरे लिए एक जोड़ी चप्पल ले आओ."एक बार एक बढ़िया जूता मिला. हरचंदा ने जानबूझकर उसका हिस्सा ले लिया. वह इसे मेरे लिए घर ले आया. यह इतना पतला हो गया कि मुझे नहीं आ सका."

हर एक दलित पिता को लगता है कि अपनी औलाद पढ़ लिखकर अपना विकास करें. इसका वर्णन लक्ष्मण जी ने 'उचक्का' में किया है."एक दिन बाबा लौट कर घर आये. बाबा डर गये और क्षत-विक्षत हो गये. वह कहने लगे, बेटा, स्कूल मत छोड़ना.घर के ऊपरी भाग के लोहे के छत बेचता हूं और तुम्हें किताबें खरीदता हूं लेकिन पाठशाला में तू जा. एक तो हरचंदा न घर का न घाट का रहा है उसके जैसी तेरी हालत होगी धड न चोरी करने निकला, न काम करने निकला."

प्रेम की समस्या

दलित और ऊंची जातियों में प्रेम की समस्या को उजागर करते हुए लक्ष्मण जी अपने खुद के जीवन में जो प्रेम हुआ उसका वर्णन करते हुए कहते हैं "जिंदगी में कभी-कभी हम खुश होते थे और सपने देखते थे कि किसी अमीर शख्स की खूबसूरत बेटी भी हमसे उतना ही प्यार करती है जितना हम. मैं सोचता था कि कब स्कूल खत्म होगा और कब मैं उससे मिलूंगा. मैं सोच रहा था कि उससे क्या बात करूं. वह मन बना रहा था कि आज या कल बात करूंगा. एक बार स्कूल के बाद मैं सामान्य रास्ते की बजाय उसके घर गया, लेकिन उसने मुझे नहीं देखा. मैं घर गया और खाना खाने के बाद फिर से उस लड़की के पास गया और वह उसी खिड़की पर खड़ी होकर मेरा इंतजार कर रही थी."

दहेज समस्या

दलितों में भी दहेज की प्रथा परंपरा चलती रहती थी . उचक्का में लक्षण जी लिखते हैं "तुका ने कहा, "आगे बढ़ो! आज स्को! एक का सलगु मारकर खाते है."(सलगु, जिसका अर्थ है नर सुअर) मैंने कहा नहीं और कहा कि कितने सूअरहैं तुम्हारे पास. उन्होंने कहा, "सोनोती की बेटी से जब विवाह हुआ. मेरे ससुर ने हमें दहेज नहीं दिया, लेकिन उन्होंने हमें एक सुअर दिया. अब हम अमीर हो गए हैं. दो या तीन गधे की सवारी कर रहे हैं. बस! यह कैसे चल रहा है. अब हम हर दिन चूल्हा जलाते थे."मैंने आपकी पूरी रामायण सुनी. जब उसने दोबारा खाने की जिद की तो मैं नहीं रुका.

जातीयता की समस्या

दलितों की हर जातियों में अपने से एक निम्न जाति निर्माण की जाती हैं . इसका वर्णन करते हुए लक्ष्मण जी लिखते हैं "इस बच्चे की मां ने एक मराठा को रखा था. और यही उसके पेट का पानी है. भले ही ये हम लोगों का पति हो, तो क्या हुआ, पैला तो हमेशा हाय ही रहता है. विवाह का समय बीत चुका है परंतु विवाह के लिए आवेदन नहीं किया जाएगा. पति-पत्नी के लोग एक-दूसरे की खुशी से एकत्र हुए थे. तो यह जाति पंचायत का फर्श उसे रोक रहा था. अगर आप उनकी बात नहीं सुनेंगे तो उन्हें अपनी जाति से अलग होने का डर था. आखिरकार लड़ाई ख़त्म हुई, शादी वहीं रुक गई. एक आम के पेड़ के नीचे पंचायत बैठी. पाँच लोग बातें करने लगे. कोई कहता है औरत को गू खिलाओ, कोई कहता है 2000 रुपये जुर्माना, कोई कहता है नाक काट दो. आखिरकार एक ने बीच का रास्ता निकाला, वो ये कि नूरी की मां के वही बाल काट दिए जाएं, इस पर सभी जज सहमत थे."

भ्रष्टाचार की समस्या

हमारी भाभी के गिरफ्तार होने के बाद हमारी अन्ना ने वैनी का सोने का हार 400 रुपये में सुनार की दुकान में रख दिया. पुलिस ने भाभी के खिलाफ केस दर्ज न करने और केस कोर्ट में न जाने देने के लिए 400 रुपये मांगे थे. हमारी वैनी ईलावा की सौतेली संतान थी; लेकिन अपने दामाद की इज्जत न खोने के लिए उन्होंने 400 रुपए में सोना गिरवी रख दिया. और भाभी को बचाया.

शराब की समस्या

दलित समाज के ज्यादातर लोगों को शराब की लत लगी हुई है . उस दिन आत्याबाई ने सभी भाइयों को खूब शराब पिलाई! हमारे दादाजी के बारे में क्या, जब वह नशे में थे, तो उन्होंने तुरंत अत्याबाई से कहा, "मैं देख रहा हूं कि कैसे लक्ष्मण शादी इस लड़की से नहीं करता है.

भीक की समस्या

दलितों में गरीबी के कारण और काम न मिलने के कारण चोरी करनी पड़ती थी या भीख मांगनी पड़ती थी "हरचंदा कहीं न कहीं बाजार जाता था और केले तो नहीं खाता था, लेकिन कभी-कभी बाजार में मौजूद केले चुरा लेता था। भीक मांगता लेकिन काम नहीं करता. इससे मैं किस तरह निपट सकता हूं? अपनी ओर से, मैंने हरचंदा से कहा, "यहां भीख मांगकर मत खाओ. कहीं और जाओ और मर जाओ."

कर्ज की समस्या

चूंकि मैं खुद ब्याज पर पैसा लेता था, इसलिए मैं उसे अपनी तनख्वाह का आधा हिस्सा देता था.यह अन्याय बर्दाश्त नहीं किया जा सकता. हम मजदूर दिवाली पर बोनस मिलते ही पत्नी के लिए साड़ियाँ खरीदो, एक बार ज्वार खरीदो, कपड़ा खरीदो आदि सपने देखते.दिवाली बोनस पाने के लिए किसी से भी सूद पर पैसे निकालते। दिवाली आई तो मजदूर खुश हो गए. इस साल मिल को मुनाफा हुआ है. यह मिल पूरे महाराष्ट्र में नंबर एक पर आई. लेकिन मैनेजर ने इस खुशी पर पानी फेर दिया. मात्र आठ फीसदी बोनस की घोषणा की गयी. इसका आधा हिस्सा सोसायटी को दिया जाना था और स्थायी कर्मचारी और प्रशिक्षित कर्मचारी को बोनस का भुगतान किया जाना था.

चुनाव की समस्या

चुनाव के समय में दलितों को चुनाव में खड़े न रहने के लिए अमीर लोग विभिन्न प्रकार के सपने दिखाते हैं और उन्हें फसाते हैं."लक्ष्मण गायकवाड़ को नहीं लगता कि वह उनका समर्थन करेंगे, वे अंदर ही अंदर बात कर रहे थे कि कुछ न कुछ बात बनेगी. उन्होंने पहली बार मेरा बैंकिंग वोकल्स रिकॉर्ड किया। उन्होंने मुझसे शर्तें पूछीं. मैंने उनसे साफ़ कह दिया, "मुझे रिक्शा, स्पीकर, कार का किराया कुल मिलाकर पाँच-सात हज़ार दे दीजिए और जब आप चुन लिए जाएँ तो घुमंतू जातियों के लिए अच्छा काम कीजिए."

उचल्या (उचक्का) आत्मकथा के कारण विमुक्त घुमंतू दलित समाज की समस्या, उनके अन्याय एवं उत्पीड़न को प्रकाश में लाया गया है . बहुत सारा दलितों का सामाजिक काम इस आत्मकथा ने किया है. इस आत्मकथा के कारण दलितों के विकास में

विभिन्न उपायों का नियोजन किया जा सकता है. 'उचल्या' का अंग्रेजी, हिंदी, कन्नड़, गुजराती, तेलुगु, उर्दू जैसी कई भाषाओं में अनुवाद किया गया। इस दलित आत्मकथा के अनुवाद के कारण राष्ट्र के सभी दलितों की समस्याओं को समाज के सामने प्रस्तुत करने का काम लक्ष्मण गायकवाड़ जी ने किया है.

संदर्भ

1. उचल्या(उचक्का)आत्मकथा:लक्ष्मण गायकवाड (अनुवादक- डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे) प्रकाशन वर्ष 1975 साकेत तिसरी आवृत्ती - 2021प्रकाशक साकेत बाबा भांड साकेत प्रकाशन प्रा. लि. 115, म. गांधीनगर, स्टेशन रोड औरंगाबाद
2. हिन्दी साहित्य में दलित सरोकार : डॉ. धनंजय चौहाण प्रकाशक: माया प्रकाशन 6ए/540, आवास विकास, हंसपुरम कानपुर-208 021 संस्करण : प्रथम, 2013
3. दलित आत्मकथने भाषिक समाज : भाषा आणि भाषाव्यवहार : डॉ. संपत गायकवाड प्रकाशक : कुंजबिहारी पचौरी जवाहर पुस्तकालय सदर बाजार,मथुरा (उ.प्र.) 281001 संस्करण : सन् 2005
4. सृजन के नये आयाम : प्रा. दत्तात्रय टिळेकर : प्रकाशक :अन्नपूर्णा प्रकाशन, साकेत नगर, कानपुर-208 संस्करण : प्रथम प्रकाशन वर्ष : 2016